KANZULIMAN
Academic International Journal on Razawiyāt
Multilingual Annual Peer-Reviewed Scholarly Online
KAIJOR ISSN (Applied)

Homepage: www.research.kanzuliman.org/
Volume: First
Issue: Two (Hindi)
Frequency: 1Volume per Year
Year: 2019
Email: kaiojr.kanzuliman@gmail.com

*3rd Nov. 2018 KAIOJR 1st National Conference on "**Razawiyāt: An International Theology**"*

आला हज़रत एक महान वैज्ञानिक

जुनैद अहमद

इंटीग्रल विश्वविद्यालय, लखनऊ

ARTICLE INFO

Article history:
Received 31 October18
Revised 31 October 18
Accepted 2 Nov 18

Keywords:
आला हज़रत का हिंदी में योगदान,
अध्धयन,मुहावरों के भंडार, जल पर शोध

ABSTRACT / सारांश

आला हज़रत क़ुरान हदीस फ़िक़ह के ही जानकार नहीं थे, बल्कि विज्ञान में भी आपको महारत हासिल थी ! आप अलैहि रहमा ने फिज़िक्स, ज्युमेट्री,ज्योलोजी, कैमिस्ट्री, इकोनोमिक्स, कामर्स, स्टेटिस्टिक्स, एस्ट्रोनोमी, एल्जेब्रा वग़ैरह सब्जेक्ट पर भी खूब लिखा है !आप अलैहि रहमा ने साइंटिस्ट आइंस्टीन के ज़मीन के गर्दिश करने के फार्मूले को ग़लत क़रार दिया है ! आला हज़रत ने अपनी बात के हक़ में क़ुरान से क़रीब 105 दलीलें दी हैं ! इस पर साइंटिस्ट्स के बीच आज भी बहस जारी है ! आप ने जल कारंग क्या है? यह दुनिया को बताया, तो मोती और शीशा पीसने से सफेद क्यूँ हो जाते हैं? इस के वुजूहात से दुनिया को आगाह किया। आलाहज़रत ने पारा के आग पर ना ठहरने के बाबत रोशनी डाली। रोशनी जितने एंगिल पर जाती है उतने पर से कैसे पलटती है ये दुनिया को बताया। आईने में दरार पड़ जाये तो दरार वाली जगह सफेद क्यूँ मालूम होती है? ये बताया । मिट्टी की क़िस्में और उनकी खासियत पर रोशनी डाली। आपने घोड़ों की नस्लें वा उनकी रफ्तार काभी ज़िक्र किया है। अपने वक़्त के मशहूर नुजूमी अमेरिका के न्यूटन आइन्स्टाइन हों या फ्राँस के अल्बर्ट एफपोना दोनों की भविष्य वाणियों को आला हज़रत ने फल्कियात की बुनियाद पर बोकस क़रार दिया, जो कि सचसाबित हुई आपने जाने माने मैथमेटिशियन सर ज़ियाउद्दीन के सवाल को सेकेंडों में हल कर लोगों को बता दिया कि आलाहज़रत का इल्म मदरसे मस्जिद के अहकाम तक महदूद नहीं है। आ प की विज्ञान के किसी मौज़ू पर आईराय को उस सब्जेक्ट के माहिरीन कि हिम्मत ना हुई कि आपकी बात झूट लादे। बल्कि आपकी राय पर काम करके माहिरीनों ने अपनी खोई मंज़िल पाली है। आप अलैहिरहमा ने हिकमत पर भी भरपूर लिखकर लोगों को अमराज़ से निपटने की दवाइयाँ बताई हैं। आपने इल्मे नुजूम से अपनी वफ़ात यानि दुनिया सेकूच करने की तिथि और समय तक बता दिया था।आपके बताये वक़्त पर ही आप फानी दुनिया को छोड़ गये। इन्ना लिल्लाहे वाइन्ना इलैहि राजीऊन। आज अमेरिका हो फ्राँस। रूस हो बरतानिया। चीन हो या मिस्र। सभी छोटे बड़े देशो में आला हज़रत की पेश लेख पर खूब रिसर्च का काम चल रहा। दुनिया हैरत ज़दा है कि एक मौलवी का क़रीब क़रीब हर सब्जेक्ट पर ऐसा कह जाना जो अमिट है अपने आप में सर प्राइज़ से कम नहीं है। अमूमन एक आदमी एक या दो ही सब्जेक्ट में ही माहिर होता है। मगर आला हज़रत का हर सिम्त सिक्के बिठा देना मुखालिफों के दाँत खट्टे कर देता है जो एक मौलवी को नमाज़ रोज़ा तक ही महदूद समझते हैं।

DOI: 10.7910/DVN/UUANSP © 2019 . Hosting by KAIOJR ,All rights reserved.

* ***Corresponding Author.*** Tel.: +91-***8924805296***
Email Id: junaidahamad128@gmail.com

Peer review under responsibility of Kanzuliman Foundation.

KAIJOR

DOI: 10.7910/DVN/UUANSP ©2019 Hosting by www.kanzuliman.org Kanzuliman Research Publications
. All rights reserved.
http://research.kanzuliman.org/volume-1-2019/

E-ISSN: APPLIED@23781 P-ISSN: APPLIED@RNI23782@2019025637

प्रस्तावना

विज्ञानके उत्थान में मुसलमानों ने जो योगदान दिया है उसको रहती दुनिया तक भुलाया नहीं जा सकता इन सभी योगदानो का अनुमान इस युग के आविष्कारों से लगाया जा सकता है। चाहे वो मुहम्मद बिन अल तूसी का खगोल शास्त्र हो या जाबिर बिन हय्याँ का रसायन शास्त्र, अभियांत्रिकी के महान वैज्ञानिक अल जज़री हो या भौतिकी विशेषज्ञ इब्न अल हैतम, सर्जरी की खोज करने वाले अबुल कसीस आदि बहुत से योगदान देने वाले वैज्ञानिक पैदा हुए उन्हीप्रकांड विद्वानों में एक नाम अल्लामा मौलाना हाफिज व मुफ्ती मोहद्दीस मोहक़्क़ीक शैखुल हदीस इमाम अहमद रज़ा खानकादरी बरेलवी अफगानी कुद्दससिर्राह का भी है। इल्म के ये अज़ीम दानिशवर, मोहद्दीस ओ मुफ्ती, मुफक्कीरो ओअदीब, मस्लेह ओ मुदब्बीर होने के साथ-साथ ऐसे मोहक़्क़ी कभी दे जिनमें कई वैज्ञानिक गुम थे। इनमें एक तरफ तो अबुल हाशिम की फिकरी वसारत ओ इल्मी रोशनी भी तो दूसरी तरफ जाबिर विनहयान जैसी सलाहियत ओ काबिलियत,एक तरफ मुसाखार ज़मी और याकूब कंदी जैसी कहनाकश की थी तो दूसरी जानिब अलतबरी, फरग़ानी, राज़ी और बुअली सीना जैसी ज़हानत मन्दी उनमें फराग़ी अलवैरूनी, उमर खयाम, ईमाम गज़ाली और इब्ने रशीद जैसी खुदा दाद ज़हानत थीं।इमाम अहमद रजा फाजिले बरेलवी कुद्दससिर्राहुल अज़ीज़ ज़ात किसी तारुफ की मोहताज नहीं है अलवत्ता लाइकए गौर जरूरहै।उनकी ज़ात पर जिस कदर भी गौर किया जाएगा तो उनकी शख्सियत के पहलू और मोजज़े सामने आते जाएंगे।हिजाब पर हिजाब उठते चले जाएंगे और हर पर्दे में अनगिनत जलवे नजर आएंगे और इल्मओ शोध कैन ए अववाबदा होंगे। इस अज़ीम विज्ञान दॉने सिर्फ science के मौजू पर 100 से जाईद किताबे और रिसाले तैहरीर फरमाए और आपके 500 से जाईद किताबों में विभीन्न स्थानों पर विज्ञान पर शोध मौजूद है जबकि दूसरे उलूम ओ फूनून को मिलाकर आपकी किताबों की तादात 1000 से ज्यादा है। इमाम अहमद रजा खान अलैहरहमाह इस्लामी विज्ञान के दाबे थे और वैज्ञानिक दृष्टि कोण को मज़हबी तना जीर मे रखते थे। यही उनका सब से बड़ा कारनामा मौजज़ा है। नजरिया तबातीला का रद्द भी आपने इन्ही बुनियादो पर फरमाया है। आप फरमाते हैं विज्ञान को मुसलमान करने का तरीका यह है कि वह तमाम साईन्सी मसाईल जिन्हे इस्लामी मसाइल से इख्तेलाफ है सबमें इस्लामी नज़रिए को रौशन किया जाए। साईन्सी दलाइल को रद्द कर के विज्ञान की रुह से इस्लाम है विरोध उस विज्ञान नज़रिए को बातिल किया जाए और इस्लामी नजरिए को साबित किया जाए।

पश्चिमी वैज्ञानिक आलाहज़रत की नजर में_:-

इमाम साहब पश्चिमी वैज्ञानिकों के लिए लिखते हैं - यूरोप वालों को तरीका इस्तेदलाल नहीं आता उन्हें अपना पक्ष रखने और अपना माद्दा साबित करने की तमीज ही नहीं है। उनके वह ख्यालात जिन्हें वह जिने वो बतौरे दलील पेश करते हैं वह दलीले ही इंसाफ पसंद दानिशवर बहस करने वाले को उनका रद्द करने के लिए काफी हैं।

आलाहजरत की शोध के विषय-

* जलकारंग है या नहीं ?
* जलकारंग क्या है?
* जल में मसाम है या नहीं?
* मोती, शीशा को ज्यादा घिसा जाए तो श्वेत क्यों हो जाता है?
* आईने में दरार पड़ जाने की स्थिति में श्वेत निशान क्यों पड़ जाता है ?
* भूकंप आने की हक़ीकी और जाहीरी कारण किया हैं?
* सूर्योदय और सूर्यास्त के बाद भी उसकी लाली माँ क्यों नज़र आती है?
* ध्वनि क्या है किस तरह उत्पन्न होती है और कैसे सुनने में आती है?
* क्या ध्वनि निकलने के बाद भी इसका अस्तित्व रहता है?
* ध्वनि कान में ही पैदा होती है या फिर बाहर भी मौजूद है?
* किसी इंसान की आवाज उसके मरने के बाद भी रह सकती है या नहीं?
* क्या जमीन सूरज के चारों तरफ चक्कर लगा रही है?

KAIJOR (2019) 48-52 © Kanzuliman Foundation 2019. All Rights are Reserved

E-ISSN: APPLIED@23781 P-ISSN: APPLIED@RNI23782@2019025637

इसके साथ नाजाने कितने उलूम है जिन पर आला हजरत ने कल मचलाया और आला हजरत ने जिस भी क्षेत्र पर लिखा उसका हक अदा किया फिर चाहे वह फिक्ही मसाइलहो, इल्मेतिबहो, इल्मेविज्ञानहो याफिरगणित (mathematics) हो। यह तो विज्ञान के मुताल्लिक सिर्फ चंद चीजें बतौर नमूना पेश की गई है । आलाहजरत की किताबों और फतावा ज़ात का मुताला करने वाले हजरात इनके अलावा भी कई तहकीकात को नज़रियात दलील पेश करते हैं जो इमाम अहले सुन्नत रहमतुल्ला अलैह की साइंसी उलुम पर अकाबरीन का मुंह बोलता सबूत है। इमामे अहले सुन्नत आलाहजरत कि इल्मी खिदमात को अंग्रेज भी कदर की निगाह से देखते हैं। अभी हाल ही में ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी जो कि दुनिया की मशहूर यूनिवर्सिटी है उसने पिछली सदी के वैज्ञानिकों

की सूची शाया की है। उसमे बतौर मुस्लिम वैज्ञानिक आलाहजरत का नाम भी शामिल है जो हम सुन्नीयो के लिए फखर की बात है। ऑक्स फोर्ड यूनिवर्सिटी के ताजा एडिशन में लफ्जे बरेली को भी शामिल किया गया है और मानी में सूफी इमाम अहमद रजा की पैदाइश दर्ज की है जो अपने तौर पर अहम बात है। इसकी वजह यह है कि आम तौर पर किसी मुकाम की शोहरत मशहूर तारीखी मकामात की वजह से होती है जबके बरेली की शोहरत हुजूर आलाहजरत कुद्स्सीर्राहुलअज़ीज़ की निस्बत से है जो अपने आप में खुद अहम और हम सुन्नियो के लिए सुरमा निगाहा है। इमाम ए इश्को मोहब्बत ने किसी भी साइन्सी उलुम और नजरियात को उस समय तक नहीं कुबूल किया जब तक उसे कुरान ओहदी सकी कसौटी पर परख नहीं लिया क्यों कि कुरान ओ हदीस के उलूम के अलावा सारे उलूम ओ फुनून ट्राइल (TRIAL) और त्रुटि (ERROR) के मरहले से गुजरते हैं। आपने जिस उलूम ओ फूनून को इस्लामी उसूल नजरिए के खिलाफ पाया उसका सख्ती से रद्द किया और गैर इस्लामी थ्योरी और नजरिए पेश करने वाले वैज्ञानिको का तारुफ फरमाया। इमाम साहब ने मुखालिफ का रद्द उसी के पेशकरदा उसूलों और नजरियों की रोशनी में किया।इमाम साहब ने मगरबी विज्ञान दानो का भरपूर तरीके से रद्द फरमाया आपने मुखालेफीन का रद्द करके अपना कलम खामोश नहीं किया बल्कि अपना नजरिया जो कुरान ओ सुन्नत से साबित उसको सच्चा साबित किया।

आला हजरत का जलपर शोध -

आलाहजरत इमाम ए अहले सुन्नत कि हजारों तहकीकात मे अगर जल की शोध पर गौर किया जाए तो मालूम पड़ता है इमाम ए अहले सुन्नत का इल्म किस मुकाम तक था। जल का ताल्लुक इल्मे तिब्यात (physics) से है उस के रंग (color), बू (smell) ,मजा (taste) , और अकसाम के मुताल्लिक उल्माए मुन्तकरीनओ मुताखरीन के साथ वैज्ञानिकों (विज्ञानदानो) के बीच भी इख्तेलाफ था। कोई उसे बेरंग बताता तो कुछ सफेद, जब कि कुछ उसे काला बताते और मानते थे। जो हजरात जल के सफेद होने का दावा करते हैं उनमें अल्लामा युसूफ बिन सईद इस्माइल रहमतुल्लाह अलैह भी है जो जल के सफेद होने की 3 दलीलें पेश करतेहैं - पहला ये की मुशाहिदा करके दूसरा यह जमने पर सफेद हो जाता है और तीसरी दलील हदीस से देते हैं के रसूल अल्लाह(□) ने फरमाया कौसर का जल दूध से सफेद और शहद से ज्यादा मीठा तोप ता चलता है जल का रंग सफेद है। आलाहजरत कलम उठाते हैं और तीनो दलीललों का रद उसी अंदाज से करते हैं पहला है कि मुशाहिदा कर के तो आलाहजरत फरमाते हैं अगर मुशाहिद पर इसको सफेद मना जाए तो जब हम किसी कपड़े पर जलको डालते हैं तो कपड़ा सफेद नजर आने की बजाए हल्का सा काला नजर आता है अगर जल सफेद होता तो सफेद कपड़े पर और सफेदी नजर आनी चाहिए थी और दूसरा यह जमने पर सफेद दिखता है तो आलाहजरत इसके जवाब में फरमाते हैं के खून का रंग लाल है जबकि वह जमने पर काला दिखाई देता है तो क्या खून का रंग काला है हरगिज़ नहीं इसी तरह से बर्फ जमती है तो उसमें हवा दाखिल हो जाती है जो बुल बुले के रूप में बर्फ बनने पर दिखाई देती है और तीसरी दलील के जवाब में आलाहजरत बढ़ा ईल्मी जवाब फरमाते हैं इमाम अहले सुन्नत फरमाते हैं के जन्नत के एहकाम और दुनिया के एहकाम अलग अलग है जन्नत की आग काली है जब कि दुनिया की आग लाल है और आला हजरत आगे फरमाते हैं इसी हदीस में आता है के नहरे कौसर का जल शहद से ज्यादा मीठा है तो क्या हमारी दुनिया का जल मीठा है।आगे हदीस में आता है कि जन्नत का जल मुश्क से ज्यादा खुशबूदार है जबकि हमारी दुनिया का जल में कोई खुशबू नहीं है खुलासा ए कलाम यह है कि दुनिया के अहकाम अलग है आखिरत के अहकाम अलग है आखिरत से कयास नहीं लगाया जा सकता है। दूसरा दावा है की जल का कोई रंग नहीं है जल में रंग ही नही है इसकी दलील वह यह पेश करते हैं की जलमें जो रंग मिलाए हमें जल उसी रंग का दिखाई देने लगता है गोया जल में रंग ही न ही है इसमें कोई भी रंग मिलाए जाने पर उस का रंग अख्ति यार कर लेता है। आलाहजरत इस नजरिए का रद्द हदीसे पाक से करते हैं फरमाते हैं कि रसूल अल्लाह ने फरमाया जिस जल में बद्बू आ जाए, मजा बदल जाए और रंग बदल जाए तो वह जल वजू के लायक नहीं रहता तो इस हदीस से पता चला कि जल का रंग होता है तभी तो रसूल फरमा रहे हैं । आला हजरत इसका दूसरा जवाब साइंटिफिक देते हैं और फरमाते हैं फिजिक्स (भौतिक विज्ञान) का उसूल है कि जिसका रंग हो तो वहीं चीज़ दिखाई देती है फिजिक्स के इस नियम को दलील बनाते हुए आला हजरत फरमाते हैं कि अगर जल का रंग नहीं होता तो वह दिखाई नहीं देता जल को हम आंखों से देख सकते हैं मतलब उस का रंगहोताहै। अल्लामा ही सफती रहमतुल्लाह अलैह जल को काला मानते हैं और इसकी दलील यह पेश करते हैं की हदीस शरीफ में आता है उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा फरमातीहै जब हमारे घर में फाका होता तो हम दो काली चीजों से गुजारा करते दो काली चीज खुजूर और ज़मज़म हैं तो इससे मालुम हुआ की जल का रंग काला होता है। आपने इसका भी इल्मी रद्द अपने रिसाले जल और तहकीकात ए रज़बिया में तहरीर फरमाया आलाहजरत नें अपनी शोध से साबित किया कि जल कारंग काले और सफेद के बीच माइल सिया है जिसको आलाहजरत नें बहुत सारी दिलीलो से साबित किया है इमाम ने अपने रिसाले जल को तहकीकात ए रज़विया में तहरीर फरमाया जिसका मुताला करके देखा जा सकता है कि

KAIJOR (2019) 48-52 © Kanzuliman Foundation 2019. All Rights are Reserved

E-ISSN: APPLIED@23781 P-ISSN: APPLIED@RNI23782@2019025637

इमाम ने किस अन्दाज़ में अपने दलाइल रखकर जलको माईल सिया साबित किया है और इस तरह से अहमदरजा फाजिले बरेलवी ने अपनी दानिश मंदी से अपने ईल्म से सालों पुराने उलझे मसले को आसानी के साथ हल कर के उम्मत ए मुस्लिमॉ पर एक अज़ीम एहसान किया। आलाहजरत की मिट्टी और पत्थर पर शोध आलाहजरत ने मिट्टी और पथ्तर की ऐसी बेमीसाल शोध पेश फरमाई है के इल्मए अलरज (geology) ये अभी तक किसी विज्ञान दॉने ऐसी नादर शोध नहीं पेशकी है। वाज़ेह रहे कि उनका ताल्लुक शोबाए विज्ञान की शाख भुविज्ञान (geology) से है साथ ही उसमें मिट्टी की जिन्स से होने के लिए पांच सिफाहात जैसे जलना, पिघलना, नरम पडना राख होना, आग से नर्म होकर सनात होने को बयान किया है जबकि दूसरे विज्ञानदॉ दो या तीन की तरफ वाजे हैं। जिन अकसाम मिट्टी और पत्थर से तैय्यमुम जाइज़ है उन अकसाम की कुल तादात 84 तक पहुंची है लेकिन इमाम ए अहले सुन्नत ने अपनी शोध से उनकी तादात 107 तक पहुंचाई है यानी 23 का इजाफा किया इसी तरह जिन अकसाम से तैय्यमुम नाजायजहै उन की तादात पिछलोने 58 बताई है जबकि इमाम ए अहले सुन्नत ने अपनी मेहनत ओ शोध से उनकी तादाद को 130 तक बताया है यानि इमाम ने 72 का इजाफा किया है।

गणित (mathematics) में आलाहजरत का इल्मओ फन -

आलाहजरत इमाम ए अहले सुन्नत अहमद रजा खान फाजिले बरेलवी का कमाल यह है कि उन्होंने अकली उलुम ओ फन खासकर विज्ञान और रियाज़ी (mathematics) को उलुमए दुनिया को फिकाह का खादीम बना दिया फतावा रज़विया की 30 जिल्दो में इस हकीकत को देखा जा सकता है कि उन्होंने फिक्ही मसाइल की तशरिह में किस तरह logarithms , exponential series , trigonometry , spherical trigonometry , chemistry , physics मे light , sound , geology , zoology , botany औरmedical science आदि का इस्तमाल किया है। आप इमाम ए अहले सुन्नत फरमाते हैं मैंने अपने वालिद मौलाना नकी अलीखान साहब से रेखागाणित (geometry) की एक किताब अकलैद सजो कि अरबी में है यह रेखागाणित (geometry) की एक बेसिक किताब है यह टेक्स्टबुक (test book) के रूप में ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी में पढ़ाई जाती रही हैं। आपने इस किताब को अपने वालिद गिरामी से पढ़ा और पढ़ने के बाद आपके मुताले को देखकर आपके वालिद साहब ने समझ लिया कि अहमदरजा खुद इसका मुताला करलेंगे तो आप जान लेंगे इमाम अहमदरजा की यह शान थी और आपको यह मकाम हासिल था कि आपने साइन के उलूम जिसमें आपने सिर्फ कलम ही नहीं उठाया बल्कि शोध भी की मैथ मेटिक्स में ना सिर्फ आपको महारत हासिल थी बल्कि आपने गणित के तमाम फार्मूलो पर रिसर्च की और कई सारे फार्मू लेके खामियों को दलील के साथ साबित किया इसके साथ आपने कई फार्मूले इजाद किए इससे पता चलता है आपको गणित में कितनी महारत हासिल थी। आपकी अरबी ज़बान में एक किताब कशफुल ईल्ला अन समतिल किब्ला नाम की हैं इसमें गणित के ऐसे फार्मूले आला हजरत ने इजाद किए हैं जिनका इस्तेमाल करके कोई भी शख्स दुनिया के किसी भी कोने में बैठकर उन फॉर्मूलो का इस्तेमाल करके किब्ले का रूख पता कर सकता है और यह रूख बहुत ही सही और मोतबर निकलता है। आलाहजरत और सर डॉक्टर जियाउद्दीन साहब का एक वाक्या आलाहजरत का यह वाक्या बहुत मशहूर है। अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी के वाइस चांसलर सर डॉक्टर जियाउद्दीन को गणित का कोई सवाल हल नहीं हो रहा था तो उन्होंने बड़े-बड़े गणित में ईल्म रखने वालों से और प्रोफेसरों से राबता कायम किया लेकिन हल नहीं हुआ तो डॉक्टर साहब ने जर्मन जाने की नियत की तैयारी शुरू की तो अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी के एक प्रोफेसर सय्यैद सुलैमान अशरफ जो इस्लामिक स्टडीज के प्रोफ़ेसर थे और आलाहज़रत के मुरीद थे डॉक्टर साहब के पास आए और आपने आलाहजरत के पास जाने की सलाह दी पहले तो आप ना माने ज्यादा कहने पर डॉक्टर साहब प्रोफेसर साहब के साथ बरेली पहुंचे जब डॉ साहब बरेली पहुंचे तो असर की अजान हो चुकी थीं आलाहजरत नमाज पढ़ने जा रहे थे और बुज़ु के लिए आस्तीने समेट ली थी तो आला हजरत ने इतने में ही पूछा सवाल क्या है? डॉक्टर साहब ने फरमाया आप नमाज से फारिग हो लीजिए उसके बाद बैठकर बताएंगे लेकिन आलाहजरत ज्यादा कहने पर आपने सवाल को दिखाया तो आपने उसी समय मुंह ज़बानी हलकर दिया डॉ जियाउद्दीन हैरत मे पड़ गए फरमाते हैं कि मैंने इल्मेलदुनी के बारे में सुना ही था आज देख भी लिया।

मुल्के सुखन की शाही तुम को रज़ा मुसल्लम,

जिस सिम्त आ गये हो सिक्के बिठा दिये हैं..

न्युटन और आइंसटाइन आलाहज़रत की नज़र में-

आलाहजरत इमाम अहमद रजा खाँ ने बहुत से विज्ञान दानो का रद्दे बलीग़ किया खासकर न्युटन और अल्वर्ट आइंसटाइन का रद्द किया क्यों कि विज्ञान की दुनिया में इन दोनों विज्ञान दानो का बहुत योगदान रहा है और यह दोनों विज्ञान दॉ विज्ञान की दुनिया में मोतबर हैं इमाम अहमद रज़ा ने न्युटन का तो नाम लेकर उसके universal law of gravitation का रद्द उसी के दिए गए उसूलों से किया इसके अलावा उसके कहीं नजरियों का आलाहजरत की किताब फौजे मुबीन दर रद्दे हरकते ज़मीन इसका english translation A FAIR SUCCESS REFUTING MOTION OF EARTH में देखा जा सकता है। इसके अलावा इस किताब में आलाहजरत नें आइंस्टाइन की theory of relativity का रद्द देखा जा सकता है कि आलाहज़रत ने किस तरह और किन दलीलों से उसके इस नजरिए का रद्द ए वलीग किया है इमाम अहमदरज़ा ने इसकी theory of relativity का रद्द करने में जो अपनी बेहतरीन mathematics का मुज़ाहरा किया है वो भी देखा जा सकता है और pure mathematics के real analysis के चंद तास्सुरात जैसे Direction, partial ordering , Binary relation , limit , linear ordaining वगैराह। विज्ञान हो या कोई भी

KAIJOR (2019) 48-52 © Kanzuliman Foundation 2019. All Rights are Reserved

E-ISSN: APPLIED@23781 P-ISSN: APPLIED@RNI23782@2019025637

इल्मओ फन वह परिक्षण (TRIAL) और त्रुटि (ERROR) के मरहले से गुजरते रहते हैं इसी के मद्दे नजर न्यूटन और आइंस्टाइन के बहूत से उसूलों और नज़रियात की इसलाहात ओ तरमीमात हुई है और खुद जर्मनी के एक सौ सांइस दानो ने आइंस्टाइन के नजरिए से इखतेलाफ किया है जिसके लिए किताब HUNDRED SCIENTISTS AGAINST ALBERT EINSTIEN देखी जा सकती है। यहां तक के आलाहज़रत ने & quote ; फौज़ेमुबीन दर रद्दे हरकते ज़मीन & quote;, नुज़ूल आयात फुरकान वा सुकून ज़मीनो आसमान और मुईन मुबीन बहर दर शमस ओ सुकून ज़मीन लिखकर हमारी जमीन के घूमने के नजरिए का ऐसा रद्दे बलीग़ किया है कि इतने सालों के बाद थी अब तक विज्ञान दॉ उन कुतब का जवाब लिखने से कासिर है राकीमुल हुरूफ की महदूद मालूमात के मुताबिक अव्वल अल जिक्र का इंग्लिश में तर्जुमाकर के मग़रबी मुल्को से विज्ञान दानो और प्रोफ़ेसरो को भी इर साल किया गया था आज जरूरत की है कि आलाहजरत की तमाम साइंसी तहकीकात को अंग्रेजी, फ्रांसी सी और डच वगैरा गैर मुल्की ज़बानो में तर्जुमा करके ज़बानों के प्रोफेसरों माहीरीन विज्ञान दानो तक पहुंचाया जाए यह सिर्फ आला हजरत को तारूफ करना ही नहीं बल्कि सुन्नियत के साथ ही मुसलमानों की अमली और इलमी खिदमात को खिराजे अकीदत भी होगा ।

निषकर्ष -

इमाम अहमद रजा कुरान के आलिम थे और कुरान मे हर शह और हर जाईज उलुम यहाँ तक की विज्ञान काभी बयान है और कुरानी उलूम को भी झुठलाया नहीं जा सकता इसलिए इमाम अहमद रजा ने कुरान और उसकी तफसीर हदीस के उलुम की रौशनी में गैर इस्लामी नजरियाती विज्ञान का रद्द किया है और सइंसा दानों का ताक्कुब फरमाया है। ज़रूरत है कि इमाम अहमदरजा के विज्ञान उसूलों और नजरियों पर तहकीकी उमूर अंजाम दिया जाए । हमारे इमाम भी यही चाहते थे कि मुसलमान पहले मुसलमान बनें और अपने सही हक अकीदे को बचा ले कुरानो हदीस की रौशनी में उलूमो फुनुन को परखे अकाइदे हक वा इस्लामी उलूम से बाबसता होने के बाद दीगर उलुम का दरस ले इस तरह उन उलुम के शर से महफुज़ रहकर खैर का फरोग़ कर सकेंगे। विज्ञान की अहमियत और ज़रूरत को मलहुज़ रखते हुए ज़रूरी हो गया है कि मुसलमान खुद को दीनी उलुम से संवारकर विज्ञान और टेक्नोलॉजी के शोबो में आगे बढे । कौम की तामीर ओ तरक्की और अकाइदे हक़ की तरवीख़ ओ आशात का पहलु पेश नज़र है इस खुसुस में आला हज़रत की किताबों और तहरीरो का मुताला फिकरी ठोकर से महफुज़ रहेगा।

उठके अब बज़्म का ही अंदाज हैं

मशरिक़ ओ मग़रिब में तेरे दर का आगाज़ हैं

संदर्भ -

1. फतावारज़विया
2. फौज़े मुबीन दर रद्दे हरकते ज़मीन
3. आला हज़रत और विज्ञान
4. जल और तहकीकात ए रजविया
5. गूगल डोट काम

KAIJOR (2019) 48-52 © Kanzuliman Foundation 2019. All Rights are Reserved